بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 09.09.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा-ए-राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का जीवन परिचय तथा सद्गुणों का ईमान वर्धन वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज, बयान फ़र्मूदा 09 सितम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर रज़ी. के जीवन की कुछ घटनाएँ बयान करूँगा। जब हज़रत अबू बकर रज़ी. के निधन का समय निकट आया तो आप रज़ी. ने हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ी. बिन औफ़ को बुलाया तथा फ़रमाया- मुझे उमर रज़ी. के सम्बंध में बताओ, तो उन्होंने कहा- ऐ ख़लीफ़-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अल्लाह की क़सम, वह आप रज़ी. का जो विचार है उससे से भी बढ़कर हैं, सिवाए इसके कि उनके स्वभाव में कठोरता है। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि कठोरता इस कारण से है कि वे मुझमें विनम्रता देखते हैं, यदि नेतृत्व उनके ज़िम्मे हो गया तो वे अपनी अनेक बातें जो उनमें हैं, उनको छोड़ देंगे। इसके बाद आप रज़ी. ने हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ी. को बुलाया तथा उनसे हज़रत उमर रज़ी. के बारे में पूछा। हज़रत उसमान रज़ी. ने कहा कि उनका भीरतरी स्वभाव उनके बाह्य स्वभाव से भी उत्तम है तथा हममें से उन जैसा कोई नहीं। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ी. दोनों सहाबियों रज़ी. से फ़रमाया कि जो कुछ मैंने तुम दोनों से कहा है, उसका वर्णन किसी अन्य के सामने मत करना, यदि मैं उमर को छोड़ता हूँ तो मैं उसमान से आगे नहीं जाता और उनको यह अधिकार होगा कि वे तुम्हारे मामलों के बारे में कोई कमी न करें, अब मेरी यह इच्छा है कि मैं तुम्हारे मामलों से अलग हो जाऊँ तथा तुम्हारे पूर्वजों में से हो जाऊँ।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत तलहा रज़ी. बिन उबैदुल्लाह के हज़रत उमर रज़ी. को ख़लीफ़ः बनाने के सम्बंध में आशंकाओं पर फ़रमाया- क्या तुम मुझे अल्लाह से डराते हो? जब मैं अपने रब से मिलूँगा और वह मुझसे पूछेगा तो मैं जवाब दूँगा कि मैंने तेरे बन्दों में से श्रेष्ट को तेरे बन्दों पर ख़लीफ़ः बनाया है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद इरशाद फ़रमाते हैं- यदि कहा जाए कि क़ौम के चुनाव से ही कोई ख़लीफ़ः हो सकता है तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत उमर रज़ी. को क्यूँ मनोनीत किया था? तो इसका जवाब यह है कि आप रज़ी. ने यूँ ही मनोनीत नहीं कर दिया बल्कि पहले सहाबियों रज़ी. से आप रज़ी. का विमर्श लेना प्रमाणित है, फिर आप रज़ी. मस्जिद में पहुंचे और लोगों से कहा- ऐ लोगो, मैंने सहाबियों से विचार विमर्श

कर लेने के बाद ख़िलाफ़त के लिए उमर रज़ी. को पसन्द किया है, क्या तुम्हें भी उसकी ख़िलाफ़त स्वीकार है? इस पर समस्त लोगों न अपनी सहमति प्रकट की। अतः यह भी एक रंग में चुनाव ही था, अन्तर है तो केवल इतना कि अन्य ख़लीफ़ाओं को ख़लीफ़ः के देहान्त के बाद जबकि हज़रत उमर रज़ी. को हज़रत अबू बकर रज़ी. की मौजूदगी में ख़लीफ़ः चुन लिया गया था।

हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु की बीमारी तथा देहान्त के वर्णन में तबरी के इतिहास में आता है कि आप रज़ी. के रोग का कारण यह हुआ कि सात जमादिल आख़िर दिन सोमवार आप रज़ी. ने स्नान किया, उस दिन अधिक ठंड होने के कारण आप रज़ी. को बुख़ार हो गया जो पन्द्रह दिनों तक रहा, यहाँ तक कि आप रज़ी. नमाज़ के लिए बाहर आने के याग्य भी न रहे, आप रज़ी. ने आदेश दिया कि हज़रत उमर रज़ी. नमाज़ पढ़ाते रहें। लोग आपकी ख़ैरियत पूछने के लिए आते रहे परन्तु दिन प्रतिदिन आपका स्वास्थय ख़राब होता गया। उस ज़माने में आप रज़ी. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिए हुए मकान (जो हज़रत उसमान रज़ी. बिन अफ़्फ़ान के मकान के सामने था) में ठहरे हुए थे। बीमारी के दिनों में अधिकांशतः देख रेख हज़रत उसमान रज़ी. करते रहे। किसी ने आप रज़ी. से कहा कि वैद्य को बुला लें तो अच्छा है। आप रज़ी. ने फ़रमाया कि वह मुझे देख चुका है। लोगों ने पूछा- उसने आपसे क्या कहा? फ़रमाया- उसने यह कहा ह إِنِّي أَفْعَلُ مَا أَشَاءُ म जो चाहता हूँ करता हूँ। आपका अभिप्रायः यह था कि अल्लाह तआला का अब यही इरादा है कि मुझे अपने पास बूला ले और किसी वैद्य की आवश्यकता नहीं है।

आप रज़ी. ने मंगल की शाम को दिनांक बाईस जमादिल आख़िर तरेसठ हिजरी को तरेसठ वर्ष की आयु में निधन फ़रमाया। आप रज़ी. का दौर दो साल तीन महीने दस दिन रहा। आप रज़ी. के होठों से जो अन्ति शब्द अदा हुए वह क़ुर्आन करीम की यह पवित्र आयत थी تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ (सूरः यूसुफ़-102) अर्थात मुझे आज्ञा पालक होने की अवस्था में मृत्यु दे तथा मुझे दिव्य पुरुषों में स्थान प्रदान कर। आप रज़ी. की अंगूठो का छापा था نِعْمَ الْقَادِرُ اللهُ अर्थात क्या ही सामर्थ्य रखने वाला है अल्लाह तआला।

हज़रत आयशा रज़ी. फ़रमाती हैं- हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया, मेरे कफ़न दफ़न से निमट कर देखना कि कोई और चीज़ तो नहीं रह गई, यदि हो तो उसको भी उमर रज़ी. के पास भेज देना। कफ़न दफ़न के विषय में फ़रमाया कि इस समय जो कपड़ा शरीर पर है उसी को धो कर दूसरे कपड़ों के साथ कफ़न देना। हज़रत आयशा रज़ी. ने निवेदन किया कि यह तो पुराना है, कफ़न के लिए नया होना चाहिए। फ़रमाया- जीवित लोग मृत लोगों की अपेक्षा नए कपड़ों के अधिक हक़दार हैं।

हज़रत आयशा रज़ी. बयान फ़रमाती हैं- आप रज़ी. ने वसीय्यत की थी कि आप रज़ी. की पतनी हज़रत असमा रज़ी. सुपुत्री उमैस आप रज़ी. को स्नान कराएँ। हज़रत अबू बकर रज़ी. के बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ी. ने उनका सहयोग किया। आप रज़ी. का कफ़न दो कपड़ों का था जबकि उनमें से एक स्नान के लिए उपयोग होने वाला था। यह भी रिवायत है कि तीन कपड़ों में कफ़न दिया गया, फिर आप रज़ी. को नबी करीम स. की चारपाई पर रखा गया (जिस पर हज़रत आयशा रज़ी. सोया करती थीं) इसी चारपाई पर आप रज़ी. का जनाज़ा उठाया गया और हज़रत उमर रज़ी. ने रसूलुल्लाह की क़बर तथा मम्बर के बीच आप रज़ी. का जनाज़ा पढ़ाया और रात के समय इसी हुजरे में रसूलुल्लाह स. की क़बर के साथ

दफ़न किया गया। आप रज़ी. का सिर रसूलुल्लाह स. के कन्धों के बराबर रखा गया। तदफ़ीन के समय हज़रत उमर रज़ी. बिन ख़त्ताब, हज़रत उसमान रज़ी. बिन अफ़्फ़ान, हज़रत तलहा रज़ी. बिन उबैदुल्लाह और हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ी. बिन अबू बकर रज़ी. क़बर में उतरे और दफ़नाया।

आप रज़ी. की चार पतनियाँ थीं। क़ुतैला सुपुत्री अब्दुल उज़्ज़ा (हज़रत अब्दुल्लाह तथा हज़रत असमा रज़ी. की माता जी) हज़रत उम्मे रोमान सुपुत्री आमिर (हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ी. तथा हज़रत आयशा रज़ी. की माता जी), हज़रत असमा रज़ी. सुपुत्री उमैस (मुहम्मद अबू बकर रज़ी. की माता जी)तथा हज़रत हबीबः रज़ी. सुपुत्री ख़ारजा (हज़रत उम्मे कुलसूम की माता जी, जिनका जन्म हज़रत अबू बकर रज़ी. के निधन के कुछ समय पश्चात हुआ)।

आप रज़ी. को जब कोई समस्या पेश आती तथा विचारकों का विमर्श लेने की आवश्यकता होती तो आप रज़ी. मुहाजिरों में से कुछ विशेष लोगों को बुलाते अथवा कई बार अधिक संख्या में मुहाजिरों तथा अन्सार को जमा फ़रमाते। आप रज़ी. ने प्रतिष्ठित सहाबियों के विमर्श से एक मकान बैतुल-माल के नाम से आरक्षित फ़रमा दिया था। जब आप रज़ी. ख़लीफ़ः बनाए गए तो आप रज़ी. की आर्थिक आवश्यकताओं की व्यवस्था भी (तीन हज़ार दर्हम वार्षिक अथवा ख़िलाफ़त के पूरे दौर में छः हज़ार दर्हम) अनुदान बैतुल-माल से की गई। आप रज़ी. पहले अभिभावक थे जिसकी जनता ने उसके ख़र्च उठाने की मंजूरी दी। सीरत की पुस्तकों में सर्वसम्मति के साथ यह मिलता है, यद्यपि आप रज़ी. ने बैतुल-माल से अपनी तथा अपने परिवार की आवश्यताओं को पूर्ति के लिए अनुदान लिया किन्तु देहान्त के समय यह पूरी धन राशि वापस कर दी। आप रज़ी. ने कज़ा विभाग (न्यायालय) तथा साधारण मुसलमानों की सुविधा के लिए फ़तवा विभाग की स्थापना की। आप रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में दीवान विभाग की व्यवस्था स्थापित नहीं हुई थी किन्तु शासनिक आदेश तथा सन्धि पत्रों को लिखना एवं अन्य लिखित कार्यों के लिए कुछ लोग नियुक्त थे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. के दौर में कोई नियमानुसार सैन्य व्यवस्था नहीं थी, जिहाद के समय हर मुसलमान मुजाहिद होता, सेना का विभाजन क़बीलों के अनुसार होता, हर एक क़बीले का अमीर अलग अलग तथा उन सब पर मुख्या नेतृत्व का ओहदा होता, जो कि आप रज़ी. का अविष्कार थी। आप रज़ी. युद्ध पर जाने वाले सेनापतियों तथा कमांडरों को निर्देश भी देते, इस संदर्भ में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने, आप रज़ी ने उसामा रज़ी. की सेना से सम्बोधित होते हुए विवेक पूर्ण उपदेशां का वर्णन फ़रमाया तथा हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़यान रज़ी. को शाम देश में युद्ध के लिए भिजवाते हुए इरशाद फ़र्मूदा स्वर्णीय उपदेश के विषय में याद दिलाया कि इसका वर्णन मैं पिछले एक ख़ुत्बः में भी कर चुका हूँ, कुछ महत्त्व पूर्ण बातों को संक्षित रूप में दोबारा बयान कर देता हूँ। हुज़ूर-ए-अनवर न फ़रमाया- यह अत्यंत आवश्यक तथा हर एक ओहदेदार के लिए याद रखने वाली बातें हैं तथा इनसे कामों में बरकत पड़ेगी।

आप रज़ी. ने कहा कि अल्लाह के तक़्वा को तुम अनिवार्य रूप से पकड़ो, वह तुम्हारे भीतर को उसी प्रकार देखता है जिस प्रकार प्रत्यक्ष को देखता है। लोगों में सर्वाधिक अल्लाह के निकट वह व्यक्ति है जो अपने कर्मों के द्वारा उसके सबसे अधिक निकट हो, मूर्खता एवं पक्षपात से बचना, अल्लाह को ये बातें अत्यंत नापसन्द हैं, फिर फ़रमाया- तुम अपनी सेना के साथ सुन्दर व्यवहार करना, उनके साथ भलाई से पेश आना, जब उन्हें उपदेश देना तो संक्षेप में देना क्यूँकि अत्यधिक बात चीत बहुत सी बातों को भुला देती

है। तुम अपनी चेतना को ठीक रखो लोग तुम्हारे लिए ठीक हो जाएँगे और नमाज़ों को उनके नियमित समय पर, रुकूअ एवं सजदों को पूरा करते हुए अदा करना। फिर फ़रमाया कि जब दुश्मन के दूत तुम्हारे पास आँए तो उनका सम्मान करना। उन्हें बहुत कम ठहराना, उनको अपने कामों के विषय में सूचित मत करना, अपने लोगों को उनसे बात चीत करने से रोक देना। जब तुम किसी से विचार विमर्श करना तो पूरी बात बताकर फिर विमर्श लेना। विचारकों से अपनी ख़बर मत छिपाना अन्यथा तुम्हारे कारण तुम्हें हानि होगी। फ़रमाया कि रात के समय अपने दोस्तों से बातें करो, शाम के समय बैठो, उनमें से लोग चुनो, उनसे बातें करो, तुम्हें सूचनाएँ मिल जाएँगी। प्रायः बिना सूचित किए ही अचानक उनकी चौकियों का निरीक्षण करना, निगरानी भी आवश्यक है। जिसे अपनी सुरक्षा चौकी से ग़ाफ़िल पाओ उसको अच्छी तरह दंडित करना। फिर फ़रमाया कि दंड देने में जल्दी मत करना तथा न पूर्णतः अनदेखा करना। अपने सेना से ग़ाफ़िल न रहना, हर समय अपने लोगों में उत्सुकता एवं उनकी जासूसी न करते रहना क्यूँकि इसी तरह उनकी बदनामी होती है। उनके भेद की बातें जो तुम्हें पता लगें, किसी और से बयान मत करना। निरर्थ लोगों के साथ मत बैठना, सच्चे तथा वफ़ादार लोगों के साथ बैठा करना। कायर न बनना अन्यथा लोग भी कायर हो जाएँगे। माले ग़नीमत में ख़्यानत से बचना (युद्ध में हाथ आए माल में बेईमानी), यह दरिद्रता के निकट करती है तथा सफलता एवं विजय को रोकती है। ये बहुत सी बातें हैं जो मैंने बयान कीं नई, इनमें से कुछ बातें जो सेना के अधिकारियों के अतिरिक्त हमारे ओहदेदारों के लिए भी अनिवार्य हैं, जिनका उन्हें ध्यान रखना चाहिए तभी काम में बरकत पड़ेगी।

आप रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में इस्लामी शासित देशों को विभिन्न रियासतों में विभाजित किया गया, इनमें आप रज़ी. ने अमीर और गवर्नर नियुक्त किए, मदीना इनकी राजधानी थी जहाँ आप रज़ी. ख़लीफ़ः के रूप में रहते थे। आप रज़ी. सुन्नत नबी करीम स. के अनुसार किसी क़ौम पर गवर्नर नियुक्त करते हुए इस बात का ध्यान रखते थे कि यदि इस क़ौम में नेक एवं दिव्य लोग होते तो उन्हीं में से गवर्नर नियुक्त फ़रमाते। अन्य कार्यकर्ताओं के चुनाव में सबसे पहले इस्लाम को देखा जाता तथा ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया जाता जो नबुव्वत की पाठ शाला से प्रशिक्षित हो। कभी क़बीलों वाले पक्षपात अथवा वंश को प्राथमिकता देने का चलन नहीं किया, इसी कठोर नियम तथा उच्च स्तर का परिणाम था कि आप रज़ी. के द्वारा नियुक्त कार्यकर्ता तथा अधिकारियों ने सदैव अपनी उत्तम प्रतिभाएँ इस्लाम और मुसलमानों की सेवा के लिए उपयोग कीं। यह वर्णन चल रहा है इन्शाअल्लाह तआला आगे भी बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131